e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 6, June 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

9710 583 466
9710 583 466
ijmrset@gmail.com
www.ijmrset.com

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology

(IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928

| Volume 4, Issue 6, June 2021 |

हिंदी काव्य में मित्रता का स्वरूप रहस्य

डॉ० श्याम पाल मौर्य
प्रभारी एवं एसोसिएट प्रोफ़ेसर
हिंदी विभाग,
बरेली कॉलेज,बरेली,उत्तर प्रदेश।

अहं के कारण जीवभाव और जीवभाव के कारण द्वैत, द्वैत के कारण राग द्वेष, राग द्वेष के कारण शत्रु मित्र तथा सुख दुखादि होते हैं -

सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं।
मायाकृत परमारथ नाहीं॥ [1]

ये रागादि जब ईश्वरोन्मुख हो जाते हैं तो दिव्य हो जाते हैं। यह दिव्यता इशर्पित होकर जब निष्काम परिपक्वता धारण कर लेती है तो जगत जीवन में भी ईश्वरेच्छा की अनुगामिनी हो जाती है। साहचर्य, सहकारिता, सहयोग, स्नेह और समर्पण सृष्टिकर्ता ब्रह्म और जीव को भी सखा बना देती है -

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥ [2]

परब्रह्म के अंश होने के कारण हम सब भी प्रेम मैत्री चाहते हैं। समान रूचि, व्यवसाय, वृत्ति, स्वभाव, गुण जाति और उद्देश्य वाले मित्रता करते हैं। गीता में भगवान उचित ही कहते हैं-

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात् संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।। [3]

श्रीमद्भागवत में भगवान उद्धव से कहते हैं-

विषयान ध्यायतश्चित्तं विषयेषु विषज्जते।
मामनुश्मरतश्चित्तं मय्येव प्रविलीयते।।
तस्मादसदभिध्यानं यथा स्वप्नमनोरथम् ।
हित्वा मयि समाधत्स्व मनो मदभाव भावितम् ॥ [4]

स्मरण ध्यान से भगवान को भी मित्र बनाया जा सकता है यह बात भगवान अपने श्रीमुख से स्वीकार करते हैं। भगवान से जो जैसे भाव से प्रेम करता है भगवान भी उसी भाव से उससे प्रेम और मित्रता करते हैं।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। [5]

भक्ति साहित्य में सखा भाव सर्वप्रधान है। ब्रज में सखीभाव के सम्प्रदाय प्रतिष्ठित किये गये हैं। सन्तों को दो ही संग अभीष्ट है-

कबीर मेरे संगी दोइ जण, एक बैश्नों एक राम।
वो है दाता मुकति का, वो सुमिरावै नाम।। [6]

श्रद्धा विश्वास के आधार पर मित्रता प्रेम की निश्छलता से प्रारम्भ होती है; जिसका कोई कारण विशेष तो नहीं होता कि किन्तु कपट की खटाई पड़ते ही यह सम्बन्ध समाप्त हो सकता है। भगवान और भक्त की मित्रता तो सर्वश्रेष्ठ होता है जैसे सुदामा और श्रीकृष्ण, राम सुग्रीव, विभीषण व राम इसके श्रेष्ठ उदाहरण है | भक्त और भगवान स्वार्थ से रहित होते हैं किन्तु भौतिक उदाहरण भी इस छल को स्वीकार नहीं करते। तुलसीदास जी कहते हैं-

जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि॥ [7]

दोहावली में तुलसीदास ने भक्त भगवान की मित्रता की श्रेष्ठता का कारण प्रतिपादित किया है-

हरौ चरहिं, तापहिं वरत, फरे पसारहिं हाथ।
तुलसी स्वारथ मीत सब परमारथ रघुनाथ ॥

हिंदी काव्य मित्रता के लौकिक अलौकिक सभी पक्षों पर अपना अभिमत व्यक्त करता है। भगवान राम सुग्रीव मिलन के समय मित्रता का विशद निरुपण करते हैं -

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।तिन्हहि विलोकत पातक भारी।।
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरू समाना।।
जिन्ह कें असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मिताई।।
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा । गुन प्रगटै अबगुनन्हि दुरावा।।
देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई।।
विपति काल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा।।
आगें कह मृदु वचन बनाई। पाछे अनहित मन कुटिलाई।।
जाकर चित अहिगत सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहि भलाई।।
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी।

कपटी मित्र सूल सम चारी।। [8]

इसी मित्रभाव को एक संस्कृत श्लोक में व्यक्त किया गया है ।

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यंच गुहति गुणान् प्रगटी करोति।
आपद्गतं न जहाति ददाति काले
सन्मित्र लक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्ताः ।।

एक अन्य स्थान पर गोस्वामी जी मानस में बड़ी महत्त्वपूर्ण बात उद्घाटित करते हैं -

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी | आपद काल परखिए चारी ।।

मित्रता की सबसे बड़ी कसौटी है विपत्ति । संपत्ति, सौभाग्य, सफलता और सुख में तो सब साथ निभाते हैं। किन्तु सच्चा मित्र वही होता है जो दुख में साथ देता है।

कहु रहीम सम्पत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
विपति कसौटी जे कसे, तेई साँच मीत।।

जब समय विपरीत आता है तो अपनी छाया भी साथ छोड़ जाती है। मिश्र शत्रु बन सकते हैं फूल भी शूल बन जाते हैं। इसीलिए परीक्षा किये बिना मित्रता नहीं करना चाहिए। जो कभी प्रेम नहीं करता, सहसा ही प्रेम के सिंधु उड़ेल दे तो सावधान हो जाना चाहिए। जो कभी नहीं झुकते, अचानक ही विनयपूर्ण अस्वाभाविक व्यवहार करे तो समझना चाहिए कुछ अनिष्ट घटित होने वाला है।

नवनि नीच कै अति दुखदाई। जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई॥ [9]
'जिमि अकलंक मयंक लखि, गनै लोग उत्पात।'

मधुर वाणी, बनावटी मधुर व्यवहार कभी-कभी भयंकर छल का पाखण्ड होते हैं। इसीलिए विज्ञ जनों ने कहा है-
यारी कीजै जानि के। पानी पीजै छानि के।।

महाकवि कालिदास अभिज्ञानशाकुन्तलम् में इसी यथार्थ की ओर निर्देश देते हैं-

अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः।
अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरी भवति सौहृदम्।। [10]

सच्चा मित्र संसार की सबसे बड़ी निधि होता है। यदि दोनों सच्चे हो तो एक और एक ग्यारह होते हैं। अंधे और बधिर भी यदि मिल जाए तो एक दूसरे की जीवन नौका पार कर सकते हैं। पारस बधिक की छुरी को भी अपने स्पर्श से सोना कर देता है। गंगाजल का पात्र भी कलवार के हाथ में मदिरा दिखाई देता है ।

कपटी मित्रों का कूटजाल बड़ा ही कठिन होता है। एकबार कोई जब उन आततायी दुष्टों की कपट मित्रता में फँस जाता है तो निकलना कठिन होता है। ऐसे मित्रों से अत्यन्त सावधान रहना चाहिए।

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥

गोस्वामी तुलसीदास भी यही सत्परामर्श देते हैं-
'यह तुलसीदास विचार कहे, कपटी को मीत किया न किया।'
यहाँ यह कहना अत्यन्त आवश्यक है कि गृह पर पत्नी भी मित्र होती है यदि वह कुनारी है तो जीवन नरक बना सकती है। पुरुष यदि दुष्ट है तो पति भी यमदूत बन सकता है। एक दूसरे का उन्नयन ही मित्रता के व्यवहार की कसौटी है।

मित्र सच्चा और श्रेष्ठ हो, तब तो सब प्रकार से संबल बनता है लेकिन असत पात्र के सम्बन्ध फँस जाने पर सब प्रकार हानि होती है। इसीलिए कविप्रवर रहीम दास ने सावधान किया है-

रहिमन ओछे नरन ते, तजउ बैर और प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दुहुँ भाव विपरीत।।

यद्यपि रहीमदासजी उत्तम प्रकृति वालों के लिए कहते हैं-

जो रहीम उत्तम प्रकृति का कर सकत कुसंग।
चन्दन विष व्याप्त नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥

किन्तु ऐसा बहुत विरलों में होता है, मानव व्यवहार के यथार्थ के इतिहास में यह अधिक सत्य और कल्याणकारी होता है कि प्रारम्भ से ही सावधान रहा जाय क्योंकि

"काजल की कोठरी में कैसैऊ सयानो जाय।
एक लीक काजल की लागिहै पै लागिहै।।"

तुलसीदास जी कहते हैं- 'रहइ न नीच मते चतुराई।'

मित्रता दायित्व निर्वाह की सुदृढ़ भाव भूमि पर टिकती हैं। यदि संमित्र हो तो कितने ही मित्र बनाये जा सकते हैं यथा पंचतन्त्र में निर्देशित किया गया है -

यानि कानि च मित्राणि, कृतानि शतानि च ।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928

| Volume 4, Issue 6, June 2021 |

पश्य मूषकमित्रेण , कपोताः मुक्तबन्धनाः ॥

महाकवि 'दिनकर' प्रणीत 'रश्मिरथी' में कर्ण मित्रता का बखान करता है -

"मित्रता बड़ा अनमोल रतन
कब उसे तोल सकता है धन?
धरती की तो है क्या बिसात?
आ जाय अगर वैकुण्ठ हाथ
उसको भी न्यौछावर कर दूँ ।
कुरुपति के चरणों पर धर दूँ।।" [11]

बात जब धर्म की हो, तो अधर्म का साथ देने वाले का सँग छोड़ देना चाहिए क्योंकि मित्र की तो बात ही क्या सम्पूर्ण जगत की शक्तियाँ भी उसे नहीं बचा सकती। मित्रता का एक नाम सुहृदयता भी है। सुहृद भी मित्र को कहते हैं। श्रेष्ठ हृदय वाले के सभी मित्र और अपने होते हैं। हिंदी साहित्य तो "वसुधैव कुटम्बकम" की परम्परा का उपासक है, प्राणिमात्र को अपना बन्धु मानकर प्रेम करता है। मित्रता के लिए हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रेम, उदारता, सहयोग, सहकारिता और करुणा से परिपूर्ण होना चाहिए। हमारे मन, मस्तिष्क की विकृति ही हमारी सबसे बड़ी शत्रु है। हमारे व्यक्तित्त्व के धैर्य धर्म व विवेक हमारे सबसे बड़े मित्र हैं। ये गुण ही समाज को स्वर्ग बना देते हैं। इसके विपरीत विकृत मन घर को भी नरक बना सकता है गोस्वामी तुलसीदास ने कितना समीचीन कहा है -

"तुलसी असमय के सखा, धीरज धर्म विवेक।
साहित, साहस, सत्यव्रत, राम भरोसो एक।।"

जिसको यथेष्ट ज्ञान होता है, वह सर्वदा सर्वत्र अपने प्रभु के दर्शन करता है। उसके लिए सब मित्र ही मित्र होते है, शत्रु कोई नहीं होता। भगवान शिव कहते हैं-

उमा जे रामचरण रत विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभु मय देखहिं जगत केहिं सन करहिं विरोध।।

समता के साम्राज्य में जो बड़भागी पहुँच जाता है- वह मायिक नानात्व से विमुक्त हो जाता है, इसीलिए राग द्वेष से भी वह निलिप्त हो जाता है। ऐसा अजातशत्रु विश्व का मित्र हो जाता है।

यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद् विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥ [12]

सुदामा-कृष्ण की मित्रता मैत्री का उत्कृष्टतम उदाहरण है। सार रूप में कहा जा सकता है

मथत-मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय।
'रहिमन' सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥

संदर्भ

1). श्रीरामचरितमानस- किष्किन्धाकाण्ड - 07
2). मुण्डकोपनिषद्-३/१/१
3). श्रीमद्भगवद्गीता - २/६२
4). श्रीमद्भागवत- भाग 11,14,27-28
5). श्रीमद् भगवद्गीता- 4.11
6). सं० माताप्रसाद / कबीर ग्रन्थावली
7). श्रीरामचरितमानस- बालकाण्ड- 57(ख)॥
8). श्रीरामचरितमानस- किष्किन्धाकाण्ड - 07
9). श्रीरामचरितमानस- अरण्यकाण्ड- ४
10). कालिदास- अभिज्ञानशाकुन्तलम् -५/२४
11). रामधारी सिंह दिनकर- रश्मिरथी- 3/56
12). ईशोपनिषद-७

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

ISSN
INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466

9710 583 466

ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com